ISSN : 2347-9108

साहित्य और विचार की अनियतकालीन पत्रिका

-धरती-

सं. शैलेन्द्र चौहान

ISSN: 2347-9108

धरती

अंक:21

साहित्य और विचार की अनियतकालीन पत्रिका

आलोचना अंक **अप्रेल, 2024**

संपादक: शैलेन्द्र चौहान

संपादकीय कार्यालय : 34/242, सेक्टर-3
प्रतापनगर,जयपुर-302033
ई मेल: dharati.aniyatkalik@gmail.com
मोबाइल : 7838897877

पत्रिका प्राप्त करने के लिए सहयोग राशि कृपया निम्न खाते में जमा कराएँ
खाताधारक का नाम :
Shailendra Singh Chauhan
खाता संख्या - 1226226979
बैंक- सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
ब्रांच - गोपालपुरा सर्किल
महावीर नगर, जयपुर-302018
IFSC : CBIN 0283093

UPI माध्यम से मोबाइल न. 7838897877 पर भेजें

प्रकाशक:
श्रीमती मीना सिंह
34/242, प्रतापनगर,
जयपुर-302033

आवरण चित्र :
पंकज दीक्षित

मूल्य
इस अंक का मूल्य :
125 रूपये
तीन अंक: 300 रुपये
डाक खर्च: 50 रुपये
प्रति अंक

मुद्रण: शीतल ऑफसेट, जयपुर

'धरती' में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त विचारों से संपादक और प्रकाशक की वैचारिक सहमति आवश्यक नहीं है।

अनुक्रम

1. संप्रेषण : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी आलोचना 3
2. आलोचना में असहमति का सिद्धान्त
   - भवदेव पाण्डेय 10
3. सौन्दर्यबोध और कलाओं का विकास - डा रामविलास
   शर्मा 20
4. हिंदी कहानी का मौजूदा पड़ाव (21 वीं सदी का प्रारंभ)
   - ओमप्रकाश ग्रेवाल 38
5. नायाब उपमाओं की कविताओं का कवि मोहन डहेरिया
   - श्रीराम निवारिया 57
6. जनकवि मुकुट बिहारी सरोज - अजय तिवारी 65
7. जनगण की भाषा में जनगण का दुख-दर्द
   कौशल किशोर की कविताएँ - सुरेश कांटक 69
8. बुहार कायनात रख लो ''टोकरी में दिगंत''
   - सुभाष राय 75
9. चयनित कविताएं - रामदुलारी शर्मा 83
10 विसंगतियों और विद्रूपताओं पर प्रहार करती कविताएं
   - कुलदीप सिंह भाटी 88
11. सहअस्तित्व का उत्सव बनाम 'सिवान में बाँसुरी'
   - प्रशान्त जैन 93
12. प्रतिरोध का राजनीतिक स्वर - प्रकाश चंद्रायन 97
13. जीवन की सार्थक पहचान - अष्टभुजा शुक्ल 99
14. दिले-नादां तुझे हुआ क्या है! - हीरालाल नागर 103
15. उजली यादों का सफरनामा - सेवाराम त्रिपाठी 114
16. संवेदनाओं से भरी गठरी है :'जमीन पर होने की खुशी'
   - पवन चौहान 125
17. क्या वाकई स्थगित होते होते हैं युद्ध ?
   - बजरंग बिहारी तिवारी 131
18. 'अधूरा घर' : तलछट के जीवन की कहानियाँ
   - प्रकाश कान्त 134
19. चुनौतीपूर्ण साहित्य चिन्तन: आलोचना का जनपक्ष
   - विजय कुमार तिवारी 137
20. कविता को हथियार बनाने का वक्त
   - डा. विजय बहादुर सिंह 145
21. तुम बनाना अपना एक घर - डा. जीवन सिंह 148

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी आलोचना : एक अवलोकन

यह कहना कि एक निश्चित समयावधि का साहित्य किसी दिन विशेष या वर्ष विशेष के बाद एकदम भिन्न शक्ल, विचार और भाषा-शैली अख्तियार कर लेगा कुछ ठीक नहीं लगता। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी आलोचना, अपने पूर्ववर्ती (स्वतंत्रतापूर्व) साहित्य से ठीक पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस के बाद या सन् सैंतालीस के बाद या चौथी दशाब्दी के बाद एकदम अलग हो गए हों, यह तो सोचा ही नहीं जा सकता। पर हाँ स्वतंत्रता प्राप्ति के एक-दो दशकों के बाद, उसमें जो परिवर्तन लक्षित हुए उन्हें अवश्य पहचाना जा सकता है और उनका विवेचन-मूल्यांकन भी किया जा सकता है। साहित्य और साहित्यालोचन में ये परिवर्तन किन कारणों से आए, इसका भी शोध और आकलन किया जा सकता है। लेकिन असल में, हिंदी साहित्य और उसकी आलोचना में, जो महत्वपूर्ण परिवर्तन नए और पुराने के द्वंद्व के रूप में दिखाई देता है, वह तार सप्तक के प्रकाशन के बाद का है। 'तार सप्तक' का प्रकाशन सन् 1943 में होता है और इसके एक वर्ष बाद इलाहबाद में 'परिमल' ग्रुप की स्थापना होती है, जिसके बाद नवलेखन की बात उठती है। अज्ञेय की भूमिका इस समय काफी महत्वपूर्ण होती है क्योंकि उस वक्त हिंदी काव्यालोचन में छायावादी काव्य की चर्चा ही जोरों पर थी। यद्यपि छायावाद का अवसान हो चुका था पर आलोचकों के लिए तब भी वह एक ज्वलंत मुद्दा था और ऐसे समय में अज्ञेय आधुनिकता बोध की बात कर रहे थे, प्रयोगशीलता की बात कर रहे थे। नयी भाषा, नई संवेदना और अनुभूति की बात कर रहे थे। इसलिए हिन्दी साहित्य में यह समय जो कि आजादी के आसपास का ही समय था, महत्वपूर्ण था।

इन्द्रनाथ मदान की पुस्तक 'आधुनिकता और हिन्दी आलोचना' में इस प्रश्न पर जो कि हिन्दी में आधुनिकता के प्रवेश और आधुनिकता बोध की अनुभूति का आलोचना के विकास से क्या रिश्ता रहा है, इसको

समझने की एक प्रारंभिक कोशिश की गई है। उनके अनुसार- बीसवीं सदी में आलोचना की अनेक धारणाओं का विकास हुआ है, जिनमें भाषागत और शैलीगत आलोचना, अस्तित्ववादी आलोचना, मनोविश्लेषणवादी आलोचना, समाजशास्त्रीय आलोचना, रूपवादी आलोचना तथा मिथकीय आलोचना को गिना जाता है। इनके मूल में आधनिकता की चुनौती है और इनमें आपसी विरोध भी है। इनके अतिरिक्त नई आलोचना के आंदोलन को भी वहाँ स्वीकार किया गया है। इन प्रवृत्तियों की उपलब्धियाँ और सीमाएं भी उन्होंने गिनाई हैं एवं विश्लेषण और विवेचन के आधार भी बताए हैं, यथा-रचना, रचनाकार, रचना का संसार, रचनाकार का संसार, रचनाविधान, वास्तव, बोध, परिवेश तथा संरचना एवं विधा को केन्द्र में रखकर 'कृति' पर विचार किया जाता रहा है। चूंकि कविता से आधुनिकता की सर्वाधिक मुठभेड़ हुई है इसलिए कविता आलोचना की परंपरा अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक प्रौढ़ और लंबी है, कहानी और उपन्यास की आलोचना परंपरा अपेक्षाकृत नई है। हाँ नाटक की परंपरा पुरानी है पर इसमें आधुनिकता बोध का विकास 'इप्टा' के अस्तित्व में आने के बाद ही होता है जो बाद को नुक्कड़ नाटक शैली के विवेचन, विश्लेषण तक पहुँचकर थम गया प्रतीत होता है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी आलोचना में शुक्लोत्तरपीढ़ी के सबसे कनिष्ठ आलोचक डॉ. नगेन्द्र संभवत: अन्तिम रसवादी, काव्यशास्त्रीय और पश्चिमी काव्यशास्त्र के सैद्धान्तिक विवेचन को भारतीय पारंपरिक काव्यशास्त्रीय रसवादी आलोचना पद्धति से तालमेल बिठाने का अतिरिक्त आग्रह रखने वाले आलोचक रहे। वहीं देवराज किसी कृति अथवा कलाकार के मूल्यांकन की कसौटी, उसकी अनुभूति की गहराई, व्यापकता और नूतनता को मानते रहे। साथ ही उन्होंने नगेन्द्र से अलग जाकर यह भी माना कि 'साहित्य की समीक्षा और मूल्यांकन' की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है- 'साहित्यकार यथार्थ के कितने विस्तार को संघटित रूप से पाठक की चेतना के सामने उपस्थित कर सका है और उस यथार्थ के विभिन्न अंगों पर, उसने कितना विवेकपूर्ण गौरव दिया है' (प्रतिक्रियाएं, पृष्ठ-169)। यथार्थ की बात आने पर प्रगतिवादी आलोचना का जिक्र करना आवश्यक हो जाता है, जिसने आधुनिकताबोध की नई व्याख्या प्रस्तुत की और स्वातंत्र्योत्तर आलोचना को सर्वथा नए आयाम दिए। आद्य प्रगतिवादी आलोचक शिवदान सिंह चौहान